अस्का-ओडिशा। गोकुलानंद मल्लिक, मत्स्य और पशु संसाधन विकास राज्य मंत्री,ओडिशा सरकार से मुलाकात कर नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवाति एवं ब्र.कु. सुज्ञानी।

दिल्ली-मजलिस पार्क। इंद्र नगर ग्राउंड में 'आत्म सशक्तिकरण के लिए दृढ़ता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगी ब्र.कु. सूरज,माउंट आबू को आत्म स्मृति का तिलक लगाकर स्वागत करते हुए ब्र.कु. शारदा। मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी दीदी एवं ब्र.कु. गीता,माउंट आबू।

कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। मिलिट्री के मेडिकल ऑफिसर आलोक शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, ब्र.कु. प्रीति एवं ब्र.कु. सपना।

जमशेदपुर-झारखंड। ब्रह्माकुमारीज यूनिवर्सल पीस पैलेस,रिट्रीट सेंटर के प्रथम वार्षिक समारोह व 90वीं शिव जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए श्रीमती तरुबाला कामनी, पूर्वी घोष, अंसु सरकार, संत मुक्तात्मा महाराज, ब्र.कु. अंजू, ब्र.कु. डॉ. नथमल अग्रवाल, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. रागिनी, ब्र.कु. संजू, ब्र.कु. सुधा एवं ब्र.कु. पीयूष रंजन।

भवानीपटना-ओडिशा। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जामा मस्जिद के द्वार में जुम्मा की नमाज अदा करने के पश्चात् अयूब अली खान(मस्जिद प्रेसिडेंट) की उपस्थिति में मोबाइल वैन द्वारा जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. सुरभि, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य।

फाजिल्का-पंजाब। सबजेल में कैदियों को ईश्वरीय संदेश और तनावमुक्त जीवन कैसे जीयें के बारे में बताने के पश्चात् जेल सुपरिंटेंडेंट सरदार गुरदेव सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रिया व ब्र.कु. शालिनी।

राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

कर्म बंधनों से मुक्त रहने का सहज तरीका

कर्मबंधन की बैलेन्स शीट को शून्य करने के लिए बाबा ने फॉर्मूला बताया कि 0 = 0 यानी कि हम जो भी सोचें, करें, कहें, देखें उसमें आत्मा, बिन्दु स्वरूप होकर करें, तब कर्म का परिणाम भी ज़ीरो होगा। अगर हमारी सोच, कर्म, देखना दोष-युक्त होगा तो उसका परिणाम ज़ीरो तो नहीं होगा ना! इसीलिए बाबा कहते हैं आत्मिक स्मृति में रहकर दूसरे को आत्मा बिन्दु देखो, तभी परिणाम ज़ीरो होगा।

ईश्वरीय परिवार के अन्दर ही हमारा एक-दूसरे से कार्मिक सम्बन्ध जुड़ता है। इसलिए हमें कर्मयोगी ये परिवार बनाता है। बाकी अगर परिवार न हो और खाली ईश्वर से ही प्यार हो तो वो तो दुनिया में भी कहीं हैं। लेकिन बाबा ने हम बच्चों को एक ऐसे मीठे सम्बन्ध में बांधा कि ये बेहद का परिवार, बेहद के बाप का परिवार, ये हमारा परिवार है। इसलिए हम ये साधारण रीति से कर्मयोगी बनने लगते हैं।

आज अगर दुनिया के अन्दर देखें तो मनुष्य के कर्म बंधन बनते जा रहे हैं और उसको बोझ का अनुभव करा रहा है। अनेक प्रकार के बोझ से बोझिल होते जा रहे हैं। ये बंधन कैसे बनता है ये भी हमें पता चल गया। तो जितना व्यक्ति देह अभिमान, देह अहंकार या देह भान के वशीभूत होकर कर्म करता है उतना ही ये बंधन बनता जाता है। दूसरा- जितना व्यक्ति के अन्दर स्वार्थ भाव प्रकट होता है या जिसको कहा जाता है सेल्फ सेंटर्ड व्यक्ति होने लगता है उतना वो बंधन क्रियेट करता है। तीसरा- जब कर्मेन्द्रिय की अधीनता आ जाती है, गुलाम हो जाते हैं इन्द्रियों के और आसक्ति वश कर्म करते हैं तो ये कर्म बंधन बनता है। चौथी बात- जब दोष दृष्टि, वृत्ति होती है तब हमारे कर्म बन्धन बनते हैं।

दोष दृष्टि, वृत्ति यानी जिसको भी देखते हैं हर इंसान के अन्दर विशेषता भी है तो कमज़ोरियां भी हैं। हरेक के अन्दर अच्छाई भी है, बुराई भी है लेकिन जब हमारी दृष्टि, वृत्ति के अन्दर दोष प्रकट होने लगते हैं कि ये व्यक्ति ऐसा है, ये व्यक्ति ऐसा करता है, उसके दोष की तरफ ही हमारी दृष्टि और वृत्ति हमेशा जाती रहे, ये कर्मबंधन क्रिएट करता है। तो कर्मबंधन अनेक बना दिए हमने। विकारों के वशीभूत होकर तो कर्म करना ये बंधन क्रिएट करता ही है। लेकिन ये सब बातें भी सूक्ष्म में हमारे बंधन क्रिएट करती गई। अब उससे मुक्त होकर हमें कर्मयोगी बनना है। तो उसकी विधि क्या है? जो कहा देह अभिमान, देह भान और देह अहंकार को खत्म करने की जो बाबा ने बताई कि बच्चे तुम आत्मा हो ये देह नहीं हो। और ये जागृति आते ही आत्म स्थिति, आत्म मनोस्थिति जितनी हमारी बनती गई आत्मिक भाव हमारा जितना डेवलप होता गया, विकसित होता गया तो हरेक को आत्मिक दृष्टि से हमने देखना आरंभ किया। तो धीरे-धीरे वो दोष दृष्टि परिवर्तन हो गई। और विशेषता भी नज़र आने लगी कि हाँ इसमें ये भी अच्छाई है, ये भी अच्छाई है।

तो इसीलिए हमारी जब ये दृष्टि, वृत्ति परिवर्तन हुई तो देही अभिमानी बनना हमारे लिए आसान हो गया। देही अभिमानी माना आत्मा के सातों गुणों के स्वरूप बनकर उसमें स्थित होकर कर्म करना। आत्मअभिमानी या देहीअभिमानी उसको नहीं कहा जाता कि हम रटते रहें कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ। रटने का नहीं है लेकिन उसका स्वरूप बनना है और स्वरूप बनने का मतलब है कि आत्मा के सातों गुण उसकी ऊर्जा नैचुरल रूप में हमारी इंद्रियों के द्वारा हर कर्म में प्रवाहित होने लगे।

सहजता से, शांति से, प्रेम से, सुख स्वरूप होकर दूसरों को भी सुख देने के भाव से जब ये ऊर्जा हमारे हर कर्म में प्रवाहित होने लगती है तो तब कहा जाता है कि हाँ देही अभिमानी होकर हम कर्म कर रहे हैं। तो वहाँ वो मैंपन देहअभिमान वाला धीरे-धीरे क्षीण होने लगता है और आत्मस्थिति हमारी पॉवरफुल होने लगती है, मजबूत होने लगती है।

भीनमाल-राज.। श्री अणदेश्वर वाटिका सोनी समाज भवन,भीमपुरा रोड़,मोदरान में श्रीअणदारामजी सेवा संस्थान मोदरान, श्री ब्राह्मण स्वर्णकार युवा संगठन जिला जालोर के सौजन्य से, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र एवं ग्लोबल अस्पताल आबू रोड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 135वें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर कार्यक्रम में डीवाईएसपी शंकरलाल मसूरिया, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता, युवा संगठन जिलाध्यक्ष रमेश सोनी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

गोपालगंज-बिहार। जिला अधिकारी पवन कुमार सिन्हा से स्नेह मुलाकात कर नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला।

उधमपुर-जम्मू कश्मीर। रेलवे पुलिस में सभी अधिकारियों को परमात्म परिचय देने के पश्चात् रेलवे कमांडेंट नाथ नारायण दत्त तिवारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता एवं ब्र.कु. बालकृष्ण। साथ ही असिस्टेंट कमांडेंट हसन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. श्यामलाल।

दिल्ली-लोधी रोड। सरकार के अनुभाग अधिकारियों को कार्यशाला कराने के उपरांत समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. पीयूष एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गिरिजा।

वाराणसी-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज परिवार से जुड़े हितेश खत्री के देहावसान पर सिन्धी कॉलोनी स्थित सिन्धी धाम में पगड़ी रस्म के दौरान आत्मा और परमात्मा का परिचय दे इस नश्वर शरीर की यथार्थता से अवगत कराते हुए ब्र.कु. तापोशी। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. राधिका, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अजीत, ब्र.कु. संदीप, अशोक, संतोष तथा अन्य।

कोरापुट-ओडिशा। नव वर्ष के उपलक्ष्य में बीएसएफ डिप्टी कमांडेंट सुशील कुमार जेना व उनकी धर्मपत्नी प्रिया और इंटेलीजेंस डीएसपी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा।